Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका

शुभ्रा श्रीवास्तव, Ph. D.

ऐसोसिएट प्रोफेसर बी0एड0 विभाग, दिग्विजय नाथ पी0जी0 कालेज गोरखपुर (उ0प्र0)

Abstract

वर्तमान में बदलते वैश्विक परिदृश्य में इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली की नींव को मजबूत करने के साथ ज्ञानवान समाज, समर्थ सशक्त राष्ट्र के निर्माण हेतु कुशल प्रशिक्षित संवेदनशील, उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि शिक्षकों को सशक्त बनाये बिना संभव नहीं है। इस हेतु उन्हें इक्कीसवीं सदी के कौशल से युक्त होकर, समग्रता को धारण करते हुए गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के साथ युवा पीढ़ी के मशालवाहक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करने की आवश्यकता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण अंग होता है। बालक के सर्वांगीण विकास में उसकी प्रभावी भूमिका होती है। वह विद्यादान करने वाला तथा विद्यार्थियों में सुसंस्कार डालने वाला होता है। वह अपने सदप्रयासों द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास करके उसे सफल नागरिक बनाकर उसके कल्याण के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग देता है। गुरुओं के त्याग, तपस्या से ही सम्पूर्ण विश्व में महान विभूतियाँ तैयार हुईं, जिन्होंने विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी योग्यता को सिद्ध किया है। प्राचीन भारत में गुरु को देव, ब्रह्मस्वरूप, आदर्शवादी प्रतिमा के रूप में वन्दित करते हुए कहा गया है–

""गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परम ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।"

अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में गुरु को मृत्यु, वरुण, सोम, औषधि और पय कहा गया है, जिसके अनुसार एक गुरु या शिक्षक को 'मृत्यु" होना चाहिए अर्थात् उसके अन्दर मार सकने की होनी चाहिए; उसमें विद्यार्थियों के कुसंस्कारों, दूषित शब्दोच्चारण, मिथ्या ज्ञान, कुआदत को दूर करने की, मारने की क्षमता होनी चाहिए। इसके साथ ही उसे बाल मनोविज्ञानवेत्ता के साथ एक अच्छा कलाकार होना चाहिए। जिस प्रकार एक कुम्हार घड़े को बनाते समय अन्दर हाथ लंगाकर बाहर–बाहर चोट मारता है और पूर्ण घड़ा बन कर तैयार हो जाता है, उसी प्रकार शिक्षक को भी कुम्हार की भाँति अपने कार्य को करना चाहिए।

शिक्षक को 'वरुण" के समान सचेत रहकर, छात्र की प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए, उसमें अच्छे गुणों को निहित करते हुए, बुराई से बचाते रहना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द का मानना है,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

"सच्चा शिक्षक वह है जो शिक्षार्थी के स्तर पर नीचे जाकर उसकी आत्मा में अपनी आत्मा भर देता है, उसके मन को. जान लेता है।"

'सोम" की भाँति शिक्षक के व्यक्तित्व में आकर्षण होना चाहिए जिससे छात्र उसके सान्धि्य में शीतलतां, आह्लाद का अनुभव करें और वह उसे बुद्धि मनीषा जैसे गुणों से परिपूर्ण करे। जिस प्रकार औषधि शारीरिक तथा मानसिक रोगों को दूर करती है, उसी प्रकार शिक्षक को भी "औषधि" की भाँति छात्रों को शारीरिंक और मानसिक रोगों से दूर रखकर उनका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा नैतिक विकास करना चाहिए। शिक्षक को 'पय" के रूप में अर्थात जल के समान बनकर जीवन प्रदान करना चाहिए। दूध बनकर उसे ज्ञान, मनोबल तथा चरित्रबल से संपुष्ट बनाये रखना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक का वाचस्पति" होना नितान्त आवश्यक है अर्थात् वाक्पटु, स्पष्टतावादी, प्रभावशाली, विषयज्ञान के साथ संसाधनयुक्त हो एवं शिष्य के समक्ष ईमानदार रहे। शिक्षक का जीवन और चरित्र आदर्श होना चाहिए। छात्र उसके जीवन से अधिक सीखते हैं बजाय उसके भाषणों से। गाँधीजी ने लिखा भी है– "मुझे लगा कि लड़के पुस्तकों एवं व्याख्यानों की अपेक्षा शिक्षकों के जीवन से अधिक सीखते हैं। उस शिक्षक को धिक्कार है जो मुँह से एक बात करता है और जीवन में भिन्न प्रकार के व्यवहार करता है।"

शिष्य को गुरु के संरक्षण में उसी प्रकार रहना चाहिए जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु माता के संरक्षण में रहता है। वर्तमान समय में तीन प्रकार के मानसिक स्तर कहे गये हैं, वे ही तीन आयाम वेदों में कहे गये हैं– आध्यात्मिक/मानसिक, उपासात्मक/ भावांत्मक , कर्मकाण्ड/मनोगत्यात्मक शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इन्हीं आयामों का ज्ञान कराया जाता है। इस प्रकार जों गुरु शिष्यों की अज्ञानता को दूर करता है, वह गुरु–शिष्य सम्बन्ध माता एवं पुत्र का होता है और इसी आधार पर शिष्य गुरु के लिए कहता है–

"पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा इह" अर्थात् आप पुनः–पुनः हमारे मध्य आयें।

आज मानवीय विचारंधारा में परिवर्तन के बावजूद उसका अपना महत्त्व है और वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में उसका दायित्व बहुत महत्वपूर्ण हो गया है जिसे आज एक मित्र, पथप्रदर्शक, सहायक, मार्गनिर्देशक के रूप में स्वीकृत किया जाता है। वह शिक्षार्थी में सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न कर, उसका मार्गदर्शन करता है और सीखे हुए ज्ञान अथवा कौशल को स्थायित्व प्रदान करता है। उत्तम शिक्षकों के अभाव में विद्यालय अपने उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं।

एक अंग्रेजी कहावत है– "A Bad instrument in the hands of a good artist tunes well." यदि देश के शिक्षक अच्छे हैं तो उसकी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली भी प्रभावशाली हो सकती है। गुरु के गुरुतर उत्तरदायित्व का निर्वहन प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता है। इसके लिए एक विशिष्ट प्रकार के व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

यहाँ प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि एक शिक्षक के रूप में वह कैसा व्यक्ति हो? उसका व्यक्तित्व कैसा हो? कैसा आचरण व व्यवहार प्रदर्शित करे? अपनी भूमिका को कैसे क्रियान्वित करे? कैसे अपने सहयोगियों, प्रशासनिक अधिकारी, अभिभावकों तथा समाज के लोगों से व्यवहार करे? उसका समाज की संस्कृति, देश के संविधान, पर्यावरण एवं विश्व के प्रति क्या उत्तरदायित्व एवं व्यवहार हो ये सभी प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं? इनका सम्बन्ध शिक्षकों की आचार संहिता से होता है जिसमें शिक्षक को मात्र शिक्षक के रूप में नहीं वरन उसके व्यक्तित्व और कार्य के विविध पक्षों का निहतीकरण है। उसके विशिष्ट व्यक्तित्व के अन्तर्गत स्वस्थ, चतुर, बुद्धिमान, उत्साही, ऊर्जावान, प्रसन्नचित्त, आत्मविश्वासी, मधुरकण्ठ, व्यवहारकुशल, विद्यार्थी से प्रेम, सहानुभूति, निष्पक्ष व्यवहार, आशावान, स्वाध्यायी, अध्ययनशील प्रवृत्ति, शिष्ट, विनम्र, संयम, मनन, चिन्तन, सम्यक दृष्टिकोण, उदारता, त्यागी, चरित्रवान, विषय विशेषज्ञ, शिक्षण कला में निषुण, संसाधनयुक्त, नवीन ज्ञान के सम्यक विकास हेतु तत्पर, सकारात्मक एवं वैज्ञानिक दृ ष्टिकोण, संवेदनशील, प्रगतिशील, परिस्थिति अनुरूप कार्य करने में सक्षम, मानवीय मूल्यों का प्रतिस्थापक, मितव्ययी, कर्तव्यनिष्ठ, श्रमनिष्ठ, व्यसनमुक्त, सत्यान्वेषी, ईमानदार, आत्मसम्मानी, कल्पनाशील, सृजनात्मक प्रवृत्ति, सहनशील, आत्मसंतोषी, निडर, अनुकूलन की प्रवृत्ति , देश प्रेम की भावना, अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति, तथा नवाचारी जैसे गुणों के साथ–साथ आत्ममूल्यांकन करने में सक्षम होना चाहिए। इसके साथ ही व्यावहारिक रूप में उसे निम्नांकित प्रकार्यों के निर्वहनकर्ता के रूप में स्वयं को सुस्थापित करना होगा–

शिक्षक

- **एक मानव के रूप में**
- **एक कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में**
- **एक प्रभावी सामाजिक–अभिकर्ता के रूप में**
- **विद्यार्थियों के नेता एवं जीवन निर्माता के रूप में**
- **नैतिकता के अभिकर्ता रूप में**
- **सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन के अभिकर्ता रूप में**
- **राष्ट्रीय एकीकरण तथा एकता स्थापित करने के अभिकर्ता रूप में**
- **मानव अधिकारों का सम्मान करने वाले और उनकी रक्षा करने वाले के रूप में**
- **समुदाय के प्रभावी नेतृत्वकर्ता के रूप में**
- **एक व्यावसायिक अभिकर्ता के रूप में**
- **परामर्शदाता के रूप में, मेंटर के रूप मे**
- **प्रबन्धनकर्ता के रूप में**
- **प्रगतिशील विचारक के रूप में।**
- **नवाचारी संगठनकर्ता व सृजनकर्ता के रूप में**

इस प्रकार जिस तरह से एक चिंकित्सक को उसके व्यवसाय की आचार संहिता का पालन करना न केवल वांछनीय एवं अनिवार्य होता है, ठीक उसी प्रकार से शिक्षक को उसके व्यवसाय के प्रति निष्ठावान होकर, समाज सेवा को, आदर्श को अपने समक्ष रखकर अपने दायित्वों का भली–भाँति निर्वहन

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

करना होगा। महान वैज्ञानिक आइंसटाइन के अनुसार– "एक शिक्षक की सर्वोच्च कला होती है कि वह सृजनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान को जगाये।"

वर्तमान बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में उसे अपनी विशेषीकृत भूमिका को ध्यान में रखकर ज्ञान की विशालतम राशि के बीच में मध्यस्थ रोल निभाना होगा जिसमें ज्ञान ग्रहण करने की अपेक्षा ज्ञान का चुनाव करना और उसका उपयोग करना हो। उसे नवाचारी संगठनकर्ता के रूप में, जनसम्पर्क कार्यकर्ता के रूप, सामाजिक अभिकर्ता की भाँति परामर्शदाता, नेतृत्वकर्ता, सलाहकार, परिवर्तनकारी अभिकर्ता की भाँति, पाठ्यक्रमेतर क्रियाकलाप के संगठनकर्ता के रूप में अन्य अनौपचारिक कार्यों को भी उत्साह एवं विवेक से करना होगा।

शिक्षकों को आज न केवल पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यक्रम के साथ वरन् विद्यार्थियों को सक्षम बनाने वाली, बदलती तकनीकी के अनुरूप बाजार के रूझानों के अनुरूप, संस्कृति और मान्यताओं के अनुरूप स्वयं को लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही उनसे यह अपेक्षा भी की जाती है कि वे उन विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को समझें जो सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित वर्ग से आते हैं और विशेष आवश्यकता वाले हैं जिन्हें अधिक सहायता व सहयोग की आवष्यकता होती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, "शिक्षकों को अपना कार्य धन कमाने का अन्तिम साधन नहीं मानना चाहिए बल्कि उसे एक ऐसा मार्ग अपनाना चाहिए जिससे वे महत्त्वपूर्ण सामाजिक सेवा कर रहे हैं एवं स्वयं सन्तुष्टि एवं स्वयं अभिव्यक्ति को प्राप्त कर रहे हैं।

आज के इस भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्य छिन्न–भिन्न हो गये हैं। समाज में भ्रष्टाचार, अन्याय, अनैतिकता, अपराध, बनावटीपन, लोलुपता, अन्धानुकरण, एन्द्रिय सुख दलबन्दी, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, आतंकवाद, संवेदनहीनता जैसी प्रवृत्तियों में वृद्धि के कारण समाज विनाश की ओर अग्रसर है जिसका प्रभाव शिक्षकों पर पड़ना स्वाभाविक है, जिसके फलस्वरूप वे मात्र वेतनभोगी कर्मचारी बनकर रह गये हैं और अपनी विद्यादानी और राष्ट्रनिर्माण की भूमिका को भूलने लगे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि वे स्वयं को पहचानें। वे ही सच्चे अर्थों में संस्कृति के पोषक मार्गदर्शक, भविष्यनिर्माता, शिक्षा के रक्षक, राष्ट्र, एवं भाग्यनिर्माता हैं जिनसे समाज को बहुत सी अपेक्षाएं हैं। उन्हें अपनी स्वयं की स्वार्थपरता को त्याग कर आदर्श स्वरूप, आचरण एवं व्यवहार को प्रस्तुत करना होगा। ऐसे समाज को निर्मित करना होगा जिसमें घृणा के स्थान पर सहयोग, अन्याय के स्थान पर न्याय, बेईमानी, भ्रष्टाचार के स्थान पर ईमानदारी, संवेदनशून्यता के स्थान पर संवेदनशीलता, झूठ–फरेब के स्थान पर सत्य एवं विश्वास निहित हो। उन्हें एक ऐसी लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करनी होगी जिसमे मानवीय गरिमा, समानता, समाजवाद, पंथनिरपेक्षता, भावात्मक एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता को महत्त्वपूर्ण स्थान् एवं सम्मान प्राप्त हो, जिसे मूर्त रूप देने के लिए शिक्षक को सामाजिक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चेतना लाते हुए अहिंसात्मक, सांस्कृतिक क्रान्तिकर्ता के रूप में कार्य करते हुए स्वयं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करके गुरुता के व्यापक अर्थ को समझ कर तदनुरूप आचरण करना ही होगा।

"The function of teacher is of vital importance. He must be a commited man, committed to faith in the future if men, in the future of humanity, in the future of his country and the world."

सन्दर्भ

शर्मा, डी.एल. : *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर.एल. बुकडिपो, मेरठ 2008।*

सक्सेना, सरोज : *विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, प्रकाशन, आगरा 2005*

बाजपेयी, एल.बी. : *शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद 2007*

सुखिया, एस.पी. : *विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2006*

सिंह, डॉ0 रामशकल : *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2004*

लाल, रमन बिहारी : *शिक्षण कला, रस्तोगी पब्लिकशन, मेरठ – 2012*

भार्गव उर्मिला एवं भार्गव ऊषा : शिक्षण सिद्धान्त एवं शिक्षण कला, राखी प्रकाशन, आगरा – 2005–06

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language